

पुवं श्यावाय रुशतीमदत्तम् dem Schwarzen eine Weisse 117, 8. पयः 62, 9.
4, 3, 9, 6, 72, 4. 8, 82, 18. पाशः 3, 29, 3, 4, 11, 1, 34, 9. रुशहसानः 8, 15. वासः
7, 77, 2. अग्नि 6, 1, 3, 6, 1. ऊर्मयः 64, 1. गावः 8. उत्तरीः 8, 1, 38. वत्स 61,
5. ऊधस् 10, 31, 11. तन् 83, 30. 10, 73, 7.

2. रुशत् s. u. 1. रुष्.

रुशम् 1) m. proparox. N. pr. eines Mannes RV. 8, 3, 18, 4, 2. VĀLAKH.
3, 9. pl. रुशमाः RV. 5, 30, 12. 18. AV. 20, 127, 1. — 2) f. रुश N. pr. Ru-
çamā wottet mit Indra, wer schneller die Erde (भूमि) umlaufe; Indra
umkreist die Erde, Ruçamā das Land Kurukshetra und gewinnt,
PAÑĀV. Br. 25, 13, 8.

रुशेकु m. N. pr. eines Fürsten Buḡ. P. 9, 23, 30. Andere Bücher lesen
रुषद्, उपद्, रुषद् u. s. w.

1. रुष्, रुम्, रुशति (किंसायाम्) Dhātup. 28, 126. रुशत् und रुषत्:
रौषति (किंसायाम्) Dhātup. 17, 42. रुष्यति (रोषे, v. 1. किंसायाम्) 26,
120. रुष् erhält keinen Bindevocal Kār. 5 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10.
अरुषत्: रोषा und रोषिता P. 7, 2, 48. Vop. 8, 79. partic. रुष्ट und रुषित
P. 7, 2, 28. Vop. 26, 118. 1) unwirsch —, missmuthig —, widerwärtig
sein, zürnen: हिन्दुनिव वषट्पादुपनिव (०दुपनिव die Ausg., पेषयन्
Comm.) बुद्ध्यात् ऋ. 9, 7, 12. सा पृश्निपाति रिफती रुशती AV.
3, 28, 1. या समा रुशत्येति das Jahr, das sich übel anlässt, Kauç. 102.
न या रोषति न यन्तु Ait. Br. 4, 10. रोषे यस्य च रुष्यामि मुहूर्तं स न जी-
वति R. 3, 33, 27. 7, 59, 2, 21. इन्नेषा रुष्यता 4, 43, 20. रुष्यती 5, 36, 39.
अरुष्यबुष्यमाणस्य (कृष्यमाणस्य die eine, कृष्यमाणस्य die andere Ausg.
des MBh.) सुकृतं नाम विन्दति । उष्कृतं चात्मनो मर्षी रुष्यत्येवापमार्ष्टि
वे ॥ Spr. 3386. ततो ऽरुष्यत् Buḡ. 17, 40. मा कर्मणा मनसा वापि वा-
चा भर्तुमवैष्य रुषती HARIV. 7796. मा रुषः MBh. 7, 2054. Buḡ. 13, 16.
52. रुष्य absol. R. 2, 98, 12. partic. रुष्ट (Gegens. तुष्ट) ergrimmt, aufge-
bracht, erzürnt, zornig Kār. zu P. 3, 2, 188. HARIV. 8121. R. 3, 30, 37.
Spr. 622. वाचिदुष्टः वाचितुष्टो रुष्टुष्टः तपो तपो 773. 4831. RĪGA-TAR.
6, 842. Buḡ. P. 4, 28, 19. 9, 10, 21. 10, 51, 12. MĀRK. P. 91, 27. PAÑĀV.
2, 8, 22. PAÑĀV. 223, 9. KULL. zu M. 9, 313. Buḡ. 8, 113. 9, 20. पुत्रस्य
मातापितरौ यस्य रुष्टबुभावपि zürnend auf MBh. 13, 5457. राजा त्वयि
रुष्टः KULL. zu M. 8, 193. मनो ऽतिरुष्टम् Buḡ. P. 4, 19, 34. रुषित = रुष्ट
Kār. zu P. 3, 2, 188. M. 9, 83. MBh. 5, 2178. 7297. HARIV. 250. 4308. 7047.
8009. R. 2, 97, 17. R. GORR. 1, 57, 6. 2, 20, 3. 36, 22. 3, 53, 42. 71, 7. 4, 32,
22. Buḡ. P. 10, 41, 34. Buḡ. 5, 56. 9, 20. एवं स रुषितस्तेन (सं० ed.
Bomb.) MBh. 7, 6993. VARĀH. Bṛh. S. 21, 24. मातृगुप्तं प्रति न नो रोषेण
रुषितं (beide Ausg. fälschlich ३०) मनः RĪGA-TAR. 3, 282. — 2) Etwas
übel aufnehmen: सो अस्य कामं विधतो न रोषति RV. 8, 88, 4. — 3) miss-
fallen, zum Ueberdruß sein: न दानो अस्य रोषति der Schmaus ist ihm
nicht zuwider RV. 8, 4, 8. इमं रुषति ग्रामं तन्नुद्विष्यमेषाकामि AV. 14,
1, 38. पाशोः missfällig (den Menschen) 4, 16, 6. अपवित्रकृत्ता रुशती पुना-
नो या लोकिनी तां तैर्ग्रामो रुशति die widerliche schwarze 12, 3, 54. रु-
षती (वाच्) missliebig, verletzend MBh. 5, 2744. v. 1. für उषती Spr. 1834.
4380. 4698. रुशती 1334, v. 1. H. 273. Buḡ. P. 6, 10, 28. जिह्वा eine
verletzende Zunge 4, 4, 17. आपः missliebig, gefährlich 9, 9, 24. — रुषित
TRIK. 3, 1, 27 fehlerhaft für रुषित.

— caus. रोषयति (रोषे) Dhātup. 32, 131. Jmd unmuthig machen, er-

zürnen, aufbringen: रोषयन्निव माम् R. 5, 36, 36. रोषये तौ न भीषये 6, 13, 23.
रोषित MBh. 1, 5885. 7, 3983. 8, 3191. HARIV. 11260. R. GORR. 1, 62, 6.
2, 20, 2 (23, 2 SCHL.). 4, 5, 16. RAGH. 9, 54. 11, 71. Çiç. 9, 18. किं रोषित-
स्तातो रुशर्मा त्वया मयि KATHĀS. 14, 50. DAÇAK. 71, 8. PAÑĀV. 163, 4.

— अग्नि, partic. ०रुषित ergrimmt, aufgebracht MBh. 8, 1747.

— घ्रा, caus. partic. ०रोषित dass.: सिंहा: HARIV. 3936.

— संप्र, partic. ०रुष्ट dass. MBh. 12, 4868.

— वि heftig zürnen auf (gen.): अकार्षार्थेन विरुष्यमाणा (विक्रु० die
neuere Ausg.) प्रेष्याजनस्य HARIV. 7043. विरुष्ट heftig zürnend, sehr auf-
gebracht KĀURAP. 40.

— सम्, partic. ०रुषित ergrimmt, aufgebracht: तेन MBh. 7, 6993 nach
der Lesart der ed. Bomb. — caus. Jmd erzürnen, in Zorn versetzen.
संरोष्यमाणा Spr. 4309. — संरोषयेत् Suç. 2, 334, 12 und संरोषित 13
gehört zu ३३.

2. रुष् (= 1. रुष्) f. (nom. रुह) Siddh. K. 247, b, 15. Ingrimmt, Zorn.
Wuth AK. 1, 1, 2, 26. H. 299. विमुञ्च मानिनि रुषम् Spr. 1903. रुषा MBh.
1, 575. 3, 2899. R. 4, 5, 29. VIKR. 80. RAGH. 5, 21. Spr. 2237. 3736. Ka-
thās. 12, 95. 43, 107. 43, 238. RĪGA-TAR. 1, 819. 6, 253. SĀH. D. 103. Buḡ.
P. 1, 18, 30. 3, 1, 11. 4, 1, 65. 4, 26. 18, 1. MĀRK. P. 18, 36. Vop. 5, 18. रु-
षेति AK. 3, 5, 18. अतिरुषा MBh. 4, 459. रुषा फलम् Spr. 901. RĪGA-
TAR. 3, 284. भयरुषो: RAGH. 9, 49. ईर्ष्यारुषाम् KATHĀS. 21, 9. am Ende eines
adj. comp.: प्रक्षेत्रनिर्वन्धरुषो हि सतः RAGH. 16, 80. देव्य उष्कितरुषः
19, 20. सरुषि नृपे Spr. 3196. — Vgl. घ०, अति०, घप०.

रुषद् m. N. pr. eines Brahmanen MBh. 9, 2270. fgg. — Vgl. रुशद्.

रुषद् m. N. pr. eines Fürsten VP. 420. — Vgl. रुशद्.

रुषा f. = 2. रुष् H. 299.

रुष्ट 1) partic. adj. s. u. 1. रुष् 1). — 2) m. N. pr. eines Muni Verz.
d. Oxf. H. 83, b, 34.

रुष्टि gaṇa मघादि zu P. 4, 2, 86. Davon adj. ०मत्त ebend.

रुष्य gaṇa मघादि zu P. 4, 2, 86. Davon adj. ०मत्त ebend.

1. रुह्, रौकति (बीजजन्मनि प्राडुर्भावे च) Dhātup. 20, 29. रुरोह्, रु-
रोह्तिव; अरुहत् und अरुहत् (vod. und episch P. 3, 1, 59), रुहेयम्, अ-
रुहेयात् (MBh. 3, 12776), अरुह्यारुहेमहि (MBh. 9, 277), अरुहस्व (HARIV.
6306), रुहाणः रोहयति und रोहा Kār. 6 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10.
अरुह्ये MBh. 13, 539; रुहा, रोहुम्, रोह्यत् op., रोह्ये ved. P.
3, 4, 10. रुहः med. aus metrischen Rücksichten. 1) ersteigen, erklimmen:
यामिव रोहति RV. 8, 41, 8. 61, 4. 1, 110, 6. द्विवो रोहंस्पृहत्पृष्टिव्याः
6, 74, 5. रुहे रुरोह् रोहति: AV. 13, 3, 26. VS. 12, 103. Ait. Br. 1, 5.
यूपम् ÇAT. Br. 5, 1, 2, 2. वृत्तम् 9, 3, 2. 6. ऋ. 11, 3, 7. वृषरिच्छा:
so v. a. aufgeladen Buḡ. P. 10, 11, 29. erklimmen so v. a. erreichen:
कामम् ÇAT. Br. 2, 1, 2, 7. मनो रुहाणाः otwa ihren Willen erreichend RV.
1, 32, 8. — 2) (in die Höhe) wachsen: वया इव रुहुः सप्त विलुहः RV.
6, 7, 6. 10, 16, 13. यथा बीजमुर्वरायां रोहति AV. 10, 0, 33. 8, 7, 17. त्रिभिः
काण्डेस्त्रिन्स्वर्गानरुहत् 12, 3, 42. ÇAT. Br. 14, 6, 33. यथा सस्यानि रो-
हति प्रकीर्णाणि मकीतले MBh. 13, 3149. द्वित्रि हि रोहति तरुः Spr.
923. 3808. ततः सस्यानि नारुहन् MBh. 1, 6623. रोहते — वनं परगुना
रुहत् Spr. 2647. रोहते सस्यम् VARĀH. Bṛh. S. 54, 95. न चापि सर्वबीजा-
नि सम्प्ररोहति MBh. 3, 12855. 5, 386. यथोपरे बीजमुत्तं न रोहते 13.